

मुहम्मद की सफलता के रहस्य

अली सीना

www.faithfreedom.org/Articles/sina40612.htm

सम्प्रदायों का सीमित प्रभाव होता है। फिर इस्लाम को विश्व का सबसे बड़ा धर्म बनने में सफलता कैसे मिली? इतने सारे लोग और उनमें बहुत से बुद्धिमान लोग भी इस्लाम के आगे पूर्णतः नतमस्तक कैसे हो गये? इस प्रश्न का उत्तर पाने के लिये हमें 'झूठ की ताकत' को समझना होगा। 'झूठ के उस्ताद' से अधिक झूठ के बारे में कौन जानता होगा? झूठ के महान उस्तादों और छल का प्रयोग करने वालों में से एक हिटलर का प्रचार मंत्री जोसफ गोएबल्स था। उसने एक बार कहा था: "यदि आप बड़ा झूठ बोलते हैं, बार—बार बोलते हैं तो वह झूठ सच लगने लगता है।"

इस परिचर्चा से पूर्व कि कैसे एक झूठ विश्व का बड़ा मजहब बन गया, आइए हम इस विषय पर फैलाये जाने वाले कुछ तार्किक हेत्वाभास (भ्रांति) पर विचार करें।

ऑर्ग्यूमेंट एंड एंटीक्रीटेटम (प्राचीन परंपराओं की दुहाई) :

यह भ्रांति इस पर बल देती है कि यदि लंबे समय से कोई परंपरा चली आ रही है तो वह सत्य होगी अथवा यूं कहें कि "वो सदा ऐसे ही रही है।" मुस्लिम पक्षधरों का ये प्रिय तर्क होता है। अरबी में इसे तकरीर कहते हैं। यह भ्रांति कहती है कि चूंकि इस्लाम 1400 वर्ष से चला आ रहा है तो यह निश्चित ही सत्य मजहब है।

ऐसे बहुत से शोध हैं जिनकी मान्यताएं सहस्रों (हजारों) वर्षों से चली आ रही थीं, किंतु इन शोधों की सत्यता को अंततः झूठ सिद्ध कर दिया गया। ऐसी ही एक मान्यता थी भू—केंद्रिकता। जब तक कि गैलीलियो ने इस सिद्धांत को गलत सिद्ध नहीं कर दिया, तब तक भले ही सम्पूर्ण जगत इस सिद्धांत को नहीं मानता था, पर विश्व के अधिकांश लोग यही मानते थे कि पृथ्वी ब्रह्माण्ड के केंद्र में है और सूर्य, चंद्रमा सहित सभी अन्य ग्रह उसका चक्कर लगाते हैं। फिर भी लंबे समय से धारित इस मान्यता और इसकी प्राचीनता के बाद भी भू—केंद्रिक सिद्धांत झूठा सिद्ध हुआ।

ऑर्ग्यूमेंट एंड न्यूरम (संख्यावादी अपील):

मुसलमान तार्किक भ्रांति का आश्रय लेकर एक और दावा करते हैं कि चूंकि विश्व का बड़ा भाग इस्लाम में विश्वास करता है, इसलिये निश्चित ही यह सच्चा है। वे तर्क देते हैं, "इतने सारे लोग कैसे गलत हो सकते हैं?"

संख्यावादी अपील इस बात पर बल देता है कि जितने अधिक लोग किसी मान्यता पर विश्वास करते हैं, उस मान्यता के सत्य होने की उतनी ही संभावना होती है।

जिस प्रकार कोई सत्य केवल इसलिये असत्य नहीं हो सकता कि उसमें कोई विश्वास नहीं करता है, उसी प्रकार यदि कोई तथ्य झूठा है तो वह केवल इस आधार पर सत्य नहीं हो जाएगा कि उसमें बहुत से लोग विश्वास करते हैं। सत्य बहुसंख्या की सहमति या असहमति के आधार पर निर्धारित नहीं होता है। सत्य व तथ्य मान्यताओं या आस्थाओं से परे होते हैं। किसी ओपीनियन

पोल के आधार पर सत्य का निर्धारण नहीं हो सकता है। जब लोग यह विश्वास करते थे कि धरती चपटी है, तब भी धरती चपटी नहीं थी।

ऑर्ग्यूमेंट एंड पॉपुलम (जनसंख्या की अपील):

ऑर्ग्यूमेंट एंड पॉपुलम अर्थात जनसंख्या की अपील आर्ग्यूमेंट एंड न्यूमरम अर्थात संख्या की अपील का ही चर है। जनसंख्या की अपील इस पर बल देता है कि चूंकि कोई बात बहुत से लोगों को अपील कर रही है तो वह सत्य है। जब आप यह दावा करते हुए किसी बात को वैध बनाने का प्रयास करते हैं कि लोगों के बड़े समूह द्वारा उस बात को प्रिय माना जाता है। इस प्रकार की गलती का रूप प्रायः भाव प्रधान भाषा से चित्रित की जाती है। उदाहरण के लिये: *"इस्लाम 1400 वर्षों से है और इसके अरबों अनुयायी हैं। इस्लाम ने लोगों के जीवन पर गहरा प्रभाव डाला है। इसने विश्व को बीज गणित अल्जेब्रा और बहुत से विज्ञान दिये हैं। जब यूरोप अंधेरा युग में रह रहा था, तब उस समय भी बगदाद की गलियां प्रकाशित रहती थीं। इस्लाम सबसे तेजी से बढ़ता धर्म है। क्या आपको लगता है कि ये सारे लोग मूर्ख बना लिये गये हैं?"*

फिर इस्लाम सफल क्यों हुआ? सच तो यह है कि इस्लाम सफल हुआ, यह एक बड़ा झूठ है। अडोल्फ हिटलर ने अपनी पुस्तक मीन कॉफ (1925) में लिखा है: "किसी राष्ट्र का बड़ा समूह किसी छोटे समूह की तुलना में सरलता से बड़े झूठ का शिकार हो सकता है।" यदि कोई ऐसा व्यक्ति था जिसको बड़े झूठ की शक्ति का पता था अथवा यह पता था कि जितना बड़ा झूठ होगा उतना ही ठोस होगा तो वह व्यक्ति हिटलर था। इस विषय में 'पॉलीटिक्स एंड द इंग्लिश लैंग्वेज' के लेखक जार्ज ऑरवेल ने एक और अच्छी बात कही है। उन्होंने लिखा है: "राजनीतिक भाषा... झूठ को सत्य प्रतीत कराने और सम्माननीय की हत्या करने तथा शुद्ध वायु का भ्रम उत्पन्न करने के लिये निर्मित की जाती है।"

फिर बड़े झूठ इतने विश्वसनीय क्यों प्रतीत होते हैं? इसके पीछे तर्क यह है कि कोई औसत सामान्य व्यक्ति सामान्यतः कोई बड़ा झूठ बोलने का साहस नहीं कर पाता है। उसे भय होता है कि उसकी बात पर कोई विश्वास नहीं करेगा और उसका उपहास उड़ेगा। चूंकि प्रत्येक व्यक्ति ने या तो सफेद झूठ सुना होता है या बोला होता है तो जब भी लोग ऐसा झूठ सुनते हैं तो तुरंत पहचान जाते हैं।

बड़े झूठ इतने विचित्र होते हैं कि सुनने वाला प्रायः चौंक जाता है। अधिकांश लोग इन झूठों पर सही—गलत का निर्णय करने की पर्याप्त स्थिति में नहीं होते हैं। जब वह झूठ भयानक होता है तो औसत व्यक्ति यह सोचे बिना नहीं रह पाता कि कैसे कोई व्यक्ति इतनी धृष्टता अर्थात ऐसी बात कहने की धृष्टता कर सकता है। आप दो केंद्रों के बीच कठिन निर्णय करने की स्थिति में पहुंच जाते हैं: कि जो व्यक्ति यह कह रहा है, वह या तो मानसिक रूप से असंतुलित मायावी है अथवा वह सत्य कह रहा है। अब यदि ऐसा हो कि किसी कारणवश जैसे कि उस व्यक्ति के प्रति सम्मान, करिश्मा या उसके प्रति प्रतिबद्धता के कारण आप उसे अस्वीकार करने की कल्पना तक नहीं कर सकते हों अथवा आप यह स्वीकार नहीं कर सकते हैं कि वह व्यक्ति मानसिक असंतुलित या ठग है? तब वह जो कहता है उस पर विश्वास करने के लिये आप बाध्य होंगे, भले ही उसकी बात का कोई अर्थ न हो।

बड़े झूठ हमारी सोचने—समझने की सामान्य बुद्धिमत्ता को कुंद कर देते हैं। यह वैसा ही होता है जैसे कि किलो भर तौलने के लिये बने तुला (तराजू) पर टनों भार रख दिया जाए। ऐसा करने से तुला सही भार (वजन) दिखाना बंद कर देता है। हो सकता है कि तुला शून्य पर अटक जाए। इस प्रकार हिटलर सही था: छोटे झूठ की तुलना में बड़े झूठ पर प्रायः विश्वास कर लिया जाता है।

जब मुहम्मद ने सातवें आकाश पर जाने की अपनी कहानी सुनाई तो अबू बक्र पहले अचंभे में पड़ गया। उसे नहीं पता था कि इस कहानी को कैसे स्वीकार करे। यह कहानी पूर्णतः पागलपन जैसी प्रतीत होती थी। उसको पास दो विकल्प थे। वह या तो स्वीकार कर ले कि जिस मित्र का वह इतना सम्मान करता है और जिसका अनुसरण करने पर उसका इतना उपहास उड़ाया गया था, वह मित्र मूर्ख है और वह ऐसे मूर्ख मित्र को छोड़ दे अथवा वह उसकी कपोलकल्पित कहानी और जो भी वह कहे उस पर विश्वास करने के लिये स्वयं को बाध्य करे। उसके पास बीच का कोई उपाय नहीं था।

इब्न इस्हाक कहते हैं कि जब मुहम्मद ने अपनी यह कहानी सुनाई तो *"बहुत से मुसलमानों ने इस्लाम छोड़ दिया। कुछ लोग अबू बक्र के पास गये और बोले, 'तुम अपने मित्र के बारे में क्या सोचते हो? वह कहता है कि बीती रात येरूशलम गया था और वहां इबादत की तथा फिर मक्का वापस लौट आया!'"* अबू बक्र ने उत्तर दिया कि वे लोग रसूल के बारे में झूठ बोल रहे हैं, तब उन लोगों ने कहा कि उस समय रसूल उस मस्जिद में था और वहीं यह कहानी सुना रहा था। अबू बक्र ने कहा, *"यदि उन्होंने ऐसा कहा है तो यह सही होगा। और इसमें इतना आश्चर्य करने की क्या बात है? वह मुझे बताते हैं कि आकाश से धरती पर अल्लाह का संदेश दिन किसी समय या रात के किसी समय उनके पास आता है और मैं उनकी बात पर विश्वास करता हूँ। जिस बात पर तुम शंका कर रहे हो, उससे अधिक तो यह बात विचित्र है!"* (सीरा, इब्न इस्हाक, पृष्ठ. 183)

तर्क दोषरहित होता है। वास्तव में अबू बक्र जो कह रहा था, वह यह था कि यदि एक बार आपने अपनी तार्किक बुद्धि को छोड़ दिया और किसी बेतुकी बात पर विश्वास करने लगे तो आप किसी भी बात पर विश्वास करने लग जाओगे। यदि एक बार आपने स्वयं को मूर्ख बन जाने दिया तो आपको सदैव मूर्ख बनने के लिये तैयार होना चाहिए, क्योंकि मूर्खता का कोई अंत नहीं होता। कितने लोग हैं जो अपनी 9 वर्षीय बेटी को एक 54 वर्ष के व्यक्ति के साथ सोने देंगे? इसके लिये मूर्खता का चरम होना चाहिए। इतनी अधिक मूर्खता मजहब पर अंधा विश्वास करने से ही आ सकती है।

हमें यह भी अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि अबू बक्र अब तक अपने धन का अधिकांश भाग मुहम्मद और उसके उद्देश्य के लिये व्यय कर चुका था। इस व्यक्ति का बहुत कुछ दांव पर लगा था। इस स्तर पर उसके पास और कोई विकल्प नहीं था, केवल इसके कि उसके मित्र ने जो भी कहा है उसको माने। उसके लिये यह स्वीकार करना अत्यंत पीड़ादायी होता कि उसे ठग लिया गया है। यह बात वह अपनी पत्नी से कैसे बता पाता? वह मक्का के उन बुद्धिमान लोगों से क्या कहता जो उस पर हंस रहे थे और जिन्होंने उससे कहा था कि वह मूर्ख है? अबू बक्र के लिये वापस जाने का मार्ग बंद हो चुका था। अब वह यही कर सकता था कि पैर जमाए और मुहम्मद उसे जहां ले जाए वहां आंखें मूंद कर उसके साथ जाए। उसे अपनी अंतरात्मा का स्वर मारना पड़ा और उसके रसूल ने जो कपोल—कल्पित बातें कहीं उस पर विश्वास करना पड़ा। जब आप किसी व्यक्ति पर अपनी पूरी आस्था रखकर

अपना सबकुछ न्यौछावर कर देते हैं तो आप अपनी स्वतंत्रता को नष्ट कर उसके हाथों की कठपुतली बन जाते हैं। सम्प्रदाय के नेता अपने अनुयायियों से यही चाहते हैं। इस प्रकार का समर्पण ही उनके नार्सिसिस्टिक लालसा को पूरा करता है।

अबू बक्र को मुहम्मद के जन्नत जाने की कहानी पर विश्वास करना बहुत कठिन जान पड़ता था, किंतु अंततः उसके पास इस कपोल—कल्पित कहानी पर विश्वास करने के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं था, क्योंकि उसके द्वारा मुहम्मद की आलोचना करने का अर्थ था कि वह मूर्ख था और यह उसके लिये अत्यंत पीड़ादायी अनुभव था। जिस व्यक्ति को आपने अल्लाह का रसूल मानकर उसमें विश्वास किया हो, उसकी निंदा करना इतना सरल नहीं होता। ऐसा करने के लिये बहुत बड़े साहस की आवश्यकता होती है और यह साहस तब आता है जब व्यक्ति किसी मूढमति व अस्थिर मस्तिष्क वाले मजहबी से दूर रहता है। जितना अधिक आप अपनी स्वतंत्रता का त्याग करेंगे और जितना अधिक आप ऐसे व्यक्ति के लिये अपना सबकुछ गंवाएंगे, उतना ही आपके लिये उसे छोड़ पाना कठिन होगा।

जब आप ठग लिये जाएं तो आप अपने मित्रों को कैसे बता पाएंगे कि आपके साथ ऐसा हो गया है और आप उनका सामना कैसे कर पाएंगे? इतने वर्षों तक आपने जो समय व धन ऐसे व्यक्ति पर व्यय किया है, उसके लिये आप अपनी अंतरात्मा को कैसे समझा पाएंगे?

औसत व सामान्य व्यक्ति यह नहीं समझ पाता है कि बड़े झूठ बोलने वाले बनावटी लोग औसत व सामान्य नहीं होते हैं, अपितु वे मनोविकृत होते हैं। यद्यपि ऐसे मनोविकृत को पहचानना सरल नहीं होता है। नार्सिसिस्ट (मनोविकृत) सदैव न केवल स्मार्ट दिखते हैं, वरन् प्रतिभावान भी दिखते हैं। वे दिखने में आकर्षक, आनंदित मुद्रा वाले, मिलनसार व करिश्माई होते हैं। मनोविकृति का बुद्धिमत्ता से कुछ लेना—देना नहीं होता है। पर हां, मनोविकृत नार्सिसिस्ट के पास अंतरात्मा नहीं होती है। मनोविकृत व्यक्ति में अंतरात्मा का अभाव और उच्च बौद्धिकता होती है जो उसे अत्यंत खतरनाक बना देती है। हिटलर इसका अच्छा उदाहरण है। कम बुद्धि वाला मनोविकृत जो आपको लूटने के लिये आपकी कनपटी पर बंदूक रखता है, वह उन स्मार्ट मनोविकृत लोगों से कम खतरनाक होता है जो बड़ी—बड़ी बातों और खोखले वचनों से लाखों लोगों को झांसे में लेते हैं।

हिटलर, स्टालिन और इतिहास के अन्य बहुत से तानाशाह भी उन्मादी थे। फिर भी बहुत कम लोग उनके उन्माद को देख पाये। जो उनके उन्माद को पहचान गये, वे भी दूसरों को नहीं बता सके। तानाशाह नेता की श्रेष्ठ बुद्धिमत्ता यह होती है कि वे सम्राट का चोंगा पहने होते हैं। प्रत्येक व्यक्ति इसे देखता है और प्रशंसा करता है। जो लोग ऐसे व्यक्ति निकट के घेरे में नहीं होते हैं, वे दूसरों को देखकर उस पर विश्वास करने लगते हैं। इस प्रकार बड़ा झूठ बोलने का अपराध किया जाता है और ऐसे झूठ की आलोचना तक नहीं सहन की जाती है।

हिंसा का प्रयोग

पूर्णतः आश्रय होने के साथ ही झूठ बोलने वाला मनोविकृत व्यक्ति अपने झूठ का बचाव करने के लिये हिंसा का आश्रय लेने को तैयार रहता है। किसी दावे के समर्थन में बल प्रयोग करना एक और ऐसी तार्किक गलती होती है जिसका प्रयोग तानाशाहों द्वारा सफलतापूर्वक किया जाता है। यह गलती आर्ग्यूमेंट एंड बैकुलम कही जाती है। यह तब होता है जब कोई व्यक्ति अपने किसी निर्णय को स्वीकार कराने के लिये दूसरों पर बल प्रयोग अथवा बल प्रयोग की धमकी का आश्रय लेता है।

मुहम्मद ने अपनी विजयों का श्रेय अल्लाह को दिया। जबकि सच यह है कि वह इसलिये जीता, क्योंकि उसने गंदा खेल खेला। वह इसलिये नहीं जीता, क्योंकि अल्लाह उसके पक्ष में था, अपितु वह इसलिये जीता क्योंकि वह धूर्त, निर्दयी एवं येन—केन—प्रकारेण जीतने पर उतारू था। यहां तक कि वो जीत के लिये छल व विश्वासघात करता था।

निहत्थे ग्रामीणों पर अचानक धावा बोलकर उनकी हत्या करने के लिये आपको किसी अल्लाह के आपके पक्ष में होने की आवश्यकता नहीं है।

आर्ग्यूमेंट एंड बैकुलन को 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। यह धमकी प्रत्यक्ष रूप से कुछ इस प्रकार हो सकती है:

- मूर्तिपूजकों को जहां पाओ वहीं काट डालो। 9:5
- मैं काफिरों के मन में भय भर दूंगा: उनकी गरदन पर प्रहार करो और उनकी उंगलियां छपक दो। 8:12

अथवा यह धमकी अप्रत्यक्ष रूप से कुछ ऐसी हो सकती है:

और जहां तक उनकी बात है जो हम पर विश्वास नहीं करते हैं और हमारे चिह्नों को अस्वीकार करते हैं, वे दोजख अर्थात् जहन्नम में जाने वाले लोग हैं। 5:11

- उनके (काफिरों) लिये इस जीवन में भी अपमान है और कयामत के दिन हम उन्हें (आग में) जलाने का दंड का स्वाद चखाएंगे। 22:9
- (उनके बारे में) जो हमारे संदेश में विश्वास नहीं करते हैं, हम उन्हें आग में झोंकेंगे, और जब उनकी चमड़ी जल जाएगी तो हम दूसरी चमड़ी लगा देंगे, फिर ऐसा करते हुए बार—बार आग में झोंकते रहेंगे जिससे कि वे दंड का स्वाद चख सकें; निश्चित ही अल्लाह सर्वसामर्थ्यवान, बुद्धिमान है। 4:56

इस धमकी से ऐसा नाटकीय भाव जन्म लेता है कि लगता है यह कोई बड़ा झूठ नहीं, अपितु बड़ी आवश्यकता है। इसका प्रभाव इतना गहरा होता है कि कोई इससे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता है। "कैसे कोई इतना आश्रय हो सकता है कि अल्लाह उसे दंड देगा जो उसमें विश्वास नहीं करता है?" अथवा "कैसे कोई केवल इस बात के लिये इतने सारे लोगों की हत्या कर

सकता है कि वे लोग उसमें विश्वास नहीं करते थे?" यदि इस प्रकार की धमकी नहीं होती तो आप अपनी बुद्धि का प्रयोग करते हुए चिंतन करते और इतनी सरलता से उसमें विश्वास नहीं कर पाते। इस प्रकार आर्ग्यूमेंट एड बैकुलम काम करता है। चरम हिंसा अत्यधिक विश्वासप्रद होती है। उत्तर कोरिया के लोग विक्षिप्त किम जोंग 2 की पूजा करते हैं। उनको इस स्थिति में लाने के लिये चरम हिंसा और असंतोष के प्रति शून्य सहनशीलता को माध्यम बनाया गया। जब आपका जीवन किसी पर अंधाविश्वास करने पर निर्भर हो जाए तो आपकी स्थिति ऐसी हो जाएगी कि आप सही या गलत अथवा सत्य या असत्य किसी भी प्रकार की बात पर विश्वास करने लगेंगे।

जब सम्प्रदाय अउम शिरिक्यो के जापानी नेता शोको अशहारा के अनुयायियों को टोकियो के भूमिगत पारपथ (सब—वे) में सरीन गैस छोड़ने और बहुत से निर्दोष लोगों की हत्या का आदेश दिया गया तो उन लोगों इस आदेश के धिनौनेपन पर प्रश्न नहीं किया।

उन अनुयायियों ने अपनी अंतरात्मा को चुप कराकर इसे अपने गुरु की महान बुद्धिमत्ता की पहचान मानकर स्वीकार किया। उनके पास दो विकल्प थे। वे या तो यह स्वीकार करते कि उनका गुरु विक्षिप्त है, वे लोग उसके द्वारा ठगे गये हैं और यह स्वीकार करते कि उन्होंने उस गुरु के लिये जो त्याग किया था वो सब व्यर्थ था अथवा वे लोग स्वयं को समझाते कि उनके गुरु की बुद्धिमत्ता इतनी महान है कि वे उसकी गहराई की थाह नहीं ले सकते और इसलिये वे उस पर प्रश्न नहीं उठा सकते हैं। इन लोगों ने अशहारा के साथ होने के लिये अपना सबकुछ त्याग दिया था। उन्होंने अपने पूर्वजन्मों के सभी सेतु तोड़ दिये थे। यदि ये लोग उसको छोड़ना भी चाहते तो इनके पास वापस लौट जाने अथवा कहीं और जाने के लिये कुछ नहीं बचा था। चूंकि अशहारा पर प्रश्न उठाना अथवा उससे असंतोष प्रकट करना तनिक भी सहन नहीं किया जाता, इसलिये उनके पास उस उन्मादी नेता में विश्वास करने के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं था और इस प्रकार वे लोग उसको मानने पर विवश हो गये थे।

डॉ. इक्यू हयाशी विख्यात चिकित्सक थे और वो अशहारा के उन्मादी अनुयायियों में से एक बन चुके थे। वह उन पांच व्यक्तियों में से थे जिन्हें टोकियो के भूमिगत पारपथों में खतरनाक सरीन गैस छोड़ने का आदेश मिला था। हयाशी एक प्रशिक्षित फिजिशियन थे और उन्होंने चिकित्सा की पढ़ाई पूरी करने के बाद जीवन बचाने के लिये हिपोक्रैटिक शपथ भी ली थी। उस खतरनाक तरल के पैकेट में छेद करने से पूर्व उन्होंने अपने सामने बैठी एक महिला की ओर देखा और कुछ क्षण के लिये उनका हृदय द्रवित हुआ। वह जानते थे कि जो करने जा रहे हैं, उस महिला की मृत्यु का कारण बनेगा। किंतु उन्होंने अपनी अंतरात्मा को चुप करा दिया और स्वयं को समझाया कि अशहारा ही उत्तम जानता है और अपने स्वामी की बुद्धिमत्ता पर संदेह करना उचित नहीं होगा।

सामान्य लोग कभी अकारण किसी की हत्या नहीं करना चाहेंगे। यहां वह व्यक्ति है जिसने आपके मन—मस्तिष्क में भर दिया है कि उसके पास जन्नत (स्वर्ग) व दोजख (नर्क) की चाबी है। आपकी शाश्वत नियति उसके हाथों में है। आप उस पर पूर्णतया विश्वास करते हैं और वह जो भी कहता है उस पर आंख बंद कर विश्वास करते हैं, यहां तक कि आप उस पर संदेह करने की कल्पना मात्र से भयभीत हो उठते हैं। उसने आपको यह समझा दिया है कि यदि उस पर संदेह करेंगे तो दोजख (नर्क) जायेंगे।

आपके पास दो विकल्प हैं: या तो ऐसे व्यक्ति को विक्षिप्त मानकर उसकी निंदा कीजिये अथवा वह जो कहे उस पर यह सोचे बिना कि "सही कह रहा है या नहीं", चलिये। आप स्वयं से पूछिये, "उसकी अवज्ञा करने से मैं अनंत काल तक दंडित किया जाऊंगा। तो क्या मुझे कोई कदम उठाना चाहिए? इस तथ्य को देखिये कि उस व्यक्ति को कितने लोगों ने स्वीकार किया है। उनमें से बहुत से लोग स्मार्ट हैं। क्या वे सभी लोग गलत हो सकते हैं?"

आप मन ही मन स्वयं से ये सब प्रश्न करते हैं और अपनी अंतरात्मा को चुप करा देते हैं। फिर प्रश्न उठता है कि कहां जाएं? क्योंकि आपके पास और कुछ नहीं, बस यही सम्प्रदाय बचा है। अतः आप अपनी अंतरात्मा को चुप कराकर अपने बुद्धि—विवेक को मार देते हैं और आप वही करने लगते हैं जो करने को कहा जाता है। आपकी आज्ञाकारिता को पुरस्कृत किया जाता है। साथ के अनुयायी आपकी प्रशंसा करते हैं और आपकी निष्ठा, समर्पण व त्याग की सराहना करते हैं। इससे आप अच्छा अनुभव करते हैं, भले ही आपके कार्य वास्तव में आपकी अंतरात्मा के विरुद्ध हों।

अतः जब आपका गुरु बताता है कि लोगों की हत्या करने से जन्नत जाओगे तो आप इस पर विश्वास कर लेते हैं। जब वह कहता है कि आपको अपने जीवन का बलिदान देना होगा, तो प्रसन्नता से ऐसा करते हैं। जब वह कहता है कि अपनी धन—संपत्ति उसको दे दो, अपनी बीवी उसको दे दो अथवा अपनी अल्पवयस्क बेटी को उसे सौंप दो जिससे कि वह उसके साथ मैथुन कर सके तो आप उसे प्रसन्न करने के लिये ऐसा करने में तनिक भी संकोच नहीं करते हैं। आपने अपनी इच्छा व बुद्धि—विवेक उसके पास गिरवी रख दी होती है। आप किसी बात पर सोचने या प्रश्न करने की स्थिति से बहुत दूर आ चुके होते हैं। आपके पास बुद्धिहीन बनकर दासता में उसका अनुसरण करने के अतिरिक्त कोई उपाय नहीं होता है। आप आज्ञाकारी होने का पूरा प्रयास करते हैं। आप अपने सम्प्रदाय के अन्य अनुयायियों के साथ होड़ लगाते हैं कि सेवा व त्याग में उनसे आगे रहें। आपसे कहा गया और आपने मान लिया कि जितना बड़ा त्याग होगा उतना ही बड़ा पुरस्कार होगा। आप उस व्यक्ति की सेवा करने, उसके लिये अपना जीवन व धन—संपत्ति लुटाने तथा उसकी इच्छाओं को पूरा करने में स्वयं को धन्य मानने लगते हैं।

उमैर 16 वर्ष का एक ऐसा बच्चा था जो एक जंग में मुहम्मद के साथ था। मुहम्मद ने शहादत की ऐसी बड़ाई की कि यह बच्चा बड़े उत्साह के साथ मरने चला गया। वह बच्चा खजूर खा रहा था और उसी में से मुट्ठीभर खजूर उठाकर उसने आसमान में फेंका और बोला, "क्या इसी सब ने मुझे जन्नत जाने से रोक रखा है? तो अब मैं सच में इसे तब नहीं खाऊंगा, जब तक कि अपने स्वामी अल्लाह से भेंट न हो जाए!" यह कहने के साथ उसने अपनी तलवार निकाली और शत्रु दल की ओर झपटा तथा शीघ्र ही उसकी मरने की इच्छा पूरी हो गयी।

एक बार आप मुसलमान हुए तो इस कल्पना से भी दूर भागने लगते हैं कि आपका प्रिय रसूल झूठ बोल रहा होगा। मनोविकृतों के पास अंतरात्मा नहीं होती है। वे कुछ भी झूठ बोल सकते हैं और वे बिना किसी ग्लानि के लाखों लोगों की हत्याएं करने में सक्षम होते हैं। उन्हें लगता है कि वे ऐसा करने के लिये अधिकृत हैं।

हिटलर को लगता था कि वह ईश्वर का कार्य कर रहा है। उसका एक सर्वविख्यात कथन इस बात को स्पष्ट करता है। अपनी पुस्तक मीन कॉफ में उसने लिखा: *"आज से मैं विश्वास करता हूँ कि मैं सर्वशक्तिमान ईश्वर की इच्छा के अनुरूप कार्य कर रहा हूँ: यहूदियों से अपनी रक्षा करते हुए मैं ईश्वरीय कार्य के लिये लड़ रहा हूँ।"*

(एडोल्फ हिटलर, मीन कॉफ, रैल्फ मैनहिम, ईडी, न्यूयार्क: मैरिनर बुक्स, 1999, पृष्ठ 65)

अयातुल्ला मोंतजेरी वह व्यक्ति था जिसे ईरान में अयातुल्ला खुमैनी का उत्तराधिकारी बनना था। किंतु खुमैनी से असहमति के कारण उसे यह पद नहीं मिला। मोंतजेरी ने अपने संस्मरण में लिखा है कि जब खुमैनी ने 3000 से अधिक असंतुष्ट लड़कों व लड़कियों की हत्या का आदेश दिया, तो उसने इस पर आपत्ति की। खुमैनी बोला कि वह इसके लिये अल्लाह को उत्तर देगा और यह भी कहा कि मोंतजेरी को अपना मुंह बंद रखना चाहिए तथा हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए।

नार्सिसिस्ट मनोविकृत लोग करिश्माई नेता होते हैं। वे बड़ी—बड़ी बातें करते हैं और उनकी बातों में बड़ा आकर्षण होता है। ऐसे लोग सामर्थ्य के आधारस्तंभ एवं जन्मजात नेता जैसा दिख सकते हैं। आप ही नहीं, बहुत से अन्य 'बुद्धिमान' लोग भी उनकी महानता को मान्यता देते हैं। ये सारे लोग गलत कैसे हो सकते हैं? वह जो बेतुकी बातें बोलता है उस पर आप भौंचक रह जाते हैं, किंतु विवेक का प्रयोग करने के स्थान पर आप अपनी बुद्धि को ही नकारकर उसकी बातों का औचित्य सिद्ध करने के लिये उसमें कोई रहस्यमय व गुप्त अर्थ ढूँढ़ने लगते हैं। उसकी बातें जितनी अधिक मूर्खतापूर्ण होती है, उतना ही वे आपको चमत्कारी व आसमानी प्रतीत होने लगती हैं।

हिटलर ने बड़े झूठों के आधार पर बड़ी संख्या में जर्मन लोगों का समर्थन प्राप्त किया। वह मंत्रमुग्ध करने वाला वक्ता था। जब वह बोलता था तो उसके स्वर तेज होते जाते थे, क्योंकि वह जर्मनी के कथित शत्रुओं पर अपना क्रोध दिखा रहा होता था। उसने जर्मन लोगों में देशभक्ति की अलख जगा दी। उसकी यह मान्यता कि झूठ जितना ही बड़ा होगा, उतना ही विश्वासयोग्य होगा, सत्य सिद्ध हुई। लाखों की संख्या में जर्मन उसकी झूठी बातों में विश्वास करने लगे। जर्मन उसको प्यार करते थे और उसकी आग उगलने वाले भाषण से भावविभोर होकर आंखों से अश्रु बहाने लगते थे।

इब्न साद ने एक हदीस में जो वर्णन किया है उससे मुहम्मद और हिटलर के बीच समानता प्रकट होती है: *"उपदेश देते समय रसूल का स्वर जब चढ़ने लगता था और क्रोध में उनकी आंखें लाल हो जाती थीं तो ऐसा लगता था कि किसी फौज का कमांडर (अपनी तर्जनी व मध्य उंगली की ओर इंगित कर) अपने फौजियों को चेतावनी देते हुए कह रहा हो कि 'कयामत और मैं इन दो उंगलियों के जैसे हैं'।"*

वो कहते, 'सर्वोत्तम मार्गदर्शन मुहम्मद का मार्गदर्शन है और किसी भी प्रकार का नवाचार (नवपरिवर्तन) सबसे बुरा काम है तथा किसी प्रकार का नवाचार विनाश को लाता है।' (इब्न साद, तबाकत, पृष्ठ. 362)

इसी स्थान पर इब्न साद कहता है: "अपने उपदेश के समय रसूल एक छड़ी घुमाया करते थे" (संभवतः अपना प्रभुत्व दिखाने के लिये!)

इतनी निर्लज्जता से दूसरों को हांकना कोई ऐसी योग्यता नहीं है जिसे आप और सीख लें या सरलता से इसमें पारंगत हो जायें। इसमें सबसे बड़ी बाधा हमारी अंतरात्मा होती है। इस प्रकार की योग्यता स्वाभाविक रूप से उन मनोविकृत नार्सिसिस्टों में आती है जिनकी अंतरात्मा मर चुकी होती है। हिटलर, पोलपोट, स्टालिन या मुहम्मद जैसे लोगों के पास अंतरात्मा नहीं थी।

अतः "इस्लाम क्यों सफल हुआ", इस प्रश्न के चार उत्तर हैं:

1. इस्लाम सबसे बड़ा झूठ है।
2. मुहम्मद निर्दयी अत्याचारी था।
3. इस्लाम विरोधी विचारों पर पूर्णतः असहिष्णु होता है।
4. इस्लाम सत्ता का एक उपकरण है।

तब सबने क्यों की मुहम्मद की प्रशंसा?

एक प्रश्न जो मुसलमानों को झकझोरता है, वह यह है कि: *यदि मुहम्मद इतना बुरा था तो उसके साथियों ने उसकी इतनी प्रशंसा क्यों की है? क्यों मुहम्मद की मृत्यु के बाद भी उनमें से एक भी व्यक्ति ने उसकी निंदा क्यों नहीं की?*

इसका उत्तर यह है कि एक ऐसा समाज जो व्यक्तित्व केंद्रित सम्प्रदाय पर आधारित हो, वहां अपने मन को अभिव्यक्त करना सदैव सुरक्षित नहीं होता है। ऐसे समाज में सत्य बोलने से आपका सामाजिक बहिष्कार या इससे भी बुरा हो सकता है, इससे आपके जीवन पर संकट आ सकता है। जो लोग स्वतंत्र रूप से सोच सकते हैं, वे भी इन दुष्परिणामों का आभास कर अपना आंख—कान बंद रखते हैं। अब्दुल्ला इब्न अबी सारा मुहम्मद के लिये कुरआन लिख रहा था और उसे पता चल गया कि कुरआन किसी अल्लाह—वल्लाह के शब्द नहीं हैं, उसे यह भी समझ में आ गया कि कुरआन मुहम्मद के दिमाग की उपज है। फिर उसे मदीना छोड़कर भागना पड़ा और जब वह मक्का में सुरक्षित पहुंच गया तो उसने लोगों को मुहम्मद के इस फ्राड के बारे में बताया। मुहम्मद ने जैसे ही मक्का पर विजय प्राप्त किया तो तुरंत अबी सारा को पकड़ लिया और उसकी हत्या का आदेश दिया।

उस्मान के हस्तक्षेप से अबी सारा बचा लिया गया, क्योंकि वह उसका मुंहबोला भाई था।

जहां आलोचकों का मुंह बंद कर दिया जाएगा, वहां चाटुकार व परतंत्र मानसिकता के लोग मिथ्या—प्रशंसा एवं अतिशयोक्ति भरी चिकनी—चुपड़ी बातें करके उस नेता का महिमामंडन करने का प्रयास करेंगे। मुहम्मद की मृत्यु के बाद उसके चाटुकारों ने उसकी मिथ्या—प्रशंसा निरंतर रखी, उसके जन्म में होने को लेकर अनेक निराधार कहानियां बनार्यीं, उसके चमत्कारों की कई झूठी कहानियां भी तैयार कीं। उन्होंने ये सब यह सोचकर किया कि इससे मुहम्मद की प्रतिष्ठा बढ़ेगी और वह पवित्र

दिखेगा। मुहम्मद से जुड़े चमत्कारों की कई ऐसी कहानियां हैं जिसे मुहम्मद ने कुरआन में स्वयं स्वीकार किया है कि वो ये चमत्कार नहीं कर सकता। (काफिरों ने बार—बार मुहम्मद से चमत्कार दिखाने को कहा जिससे कि वे उस पर विश्वास कर सकें (कुरआन 17:90) और मुहम्मद उनसे कहता रहा, "मेरे अल्लाह की महिमा! मैं एक आदमी (अल्लाह के) रसूल के सिवा आखिर और क्या हूँ?") कुरआन 17:93

1400 वर्ष बाद भी करोड़ों की संख्या में मुसलमान उसकी प्रकार का व्यवहार करते हैं, जिस प्रकार वे मदीना में मुहम्मद के समय करते थे। मुसलमानों में जो असंतुष्ट हैं वो बात करने में भय का अनुभव करते हैं और यदि उन्होंने अपनी बात कही तो तुरंत उन्हें चुप करा दिया जाता है, जबकि परतंत्र मानसिकता वाले चाटुकारों को मुहम्मद और उसके "सद्गुणों" का बखान करने के लिये सम्मानित किया जाता है। पाखंड और चाटुकारिता से भरे इस प्रकार के दमनकारी वातावरण में सत्य की विजय कैसे हो सकती है?

मुहम्मद द्वारा अपनी आलोचना करने वाले लोगों की हत्या करने का आदेश देने की अनेक घटनाएं हैं। बहुत सी ऐसी भी घटनाएं हैं जिसमें मुहम्मद का दाहिना हाथ उमर हर समय अपनी तलवार खींचे तैयार रहता था और जो भी उसके मालिक मुहम्मद के प्रभुत्व पर प्रश्न उठाता था उसे गरदन काट देने की धमकी देता था। मुहम्मद ने चाटुकारिता को बढ़ावा दिया और स्वतंत्र चिंतन व आलोचना को दंडित किया। इस प्रकार के अत्याचारी वातावरण में फंसे गये लोग अंततः उस नेता के अलौकिक गुणों पर विश्वास करने को विवश होते हैं तथा उन गुणों में उनका विश्वास यथार्थ व वास्तविक बन जाता है।

कुछ समय पूर्व आंखों के सर्जनों का एक दल मोतियाबिंद से ग्रस्त लोगों का उपचार करने उत्तरी कोरिया गया। हजारों की संख्या में युवा व वृद्ध लोग पंक्तिबद्ध होकर उपचार कराने आ खड़े हुए और जब वे ठीक हो गये तो वे डॉक्टर यह देखकर भौंचक रह गये कि नेत्रों की ज्योति वापस पाने के बाद उन लोगों ने पहला काम जो किया वो यह था कि दीवार पर टंगे अपने तानाशाह किम जोंग द्वितीय के बड़े चित्र के समक्ष झुके और उसके प्रति आभार प्रकट किया। उन लोगों उन डॉक्टरों के प्रति आभार प्रकट नहीं किया, जिन्होंने उनके नेत्रों की ज्योति लौटाई थी, पर उन्होंने उस अत्याचारी तानाशाह के प्रति आभार अवश्य प्रकट किया जिसने उन्हें इतने वर्षों तक अंधा रखा था।

मुहम्मद का मिशन आधा तो इस कारण फला—फूला, क्योंकि वह एक ऐसे समय और ऐसे स्थान पर आया जहां अज्ञानी, अंधविश्वासी और बड़े पैमाने पर उग्रराष्ट्रीयता लोग रहते थे। लूटमार करने वाले अपने मजहब को स्थापित करने के लिये उसे जिन गुणों की आवश्यकता थी, वो सब उसके आरंभिक अनुयायियों में पहले से ही थे। उग्रराष्ट्रीयता, मजहबी कट्टरता, अहंकार, अहंकारोन्माद, मूर्खता, आत्मश्लाघिता (अपनी प्रशंसा में बड़ी—बड़ी डींगे हांकना), लालच, यौन—वासना, जीवन के प्रति तिरस्कार व अन्य नीच चारित्रिक लक्षण इस्लाम की विशिष्टता हैं और उस अरब में ये सब कच्चा माल पहले से ही उपलब्ध था जहां मुहम्मद ने अपनी पैगम्बरी का व्यवसाय प्रारंभ किया। बाद में उन राष्ट्रों पर भी इन लक्षणों को थोपा गया जो इस्लाम का शिकार बने। जिनमें ये मूल लक्षण पहले से थे, उन्हें पुनः समूह बनाने और अपने विकृत व आपराधिक व्यवहार को ईश्वरीय वैधता देने के लिये इस्लाम में एक सामान्य आधार मिला।

कुछ प्रभावशाली मनोविकृत

मुहम्मद की परिघटना को समझने के लिये हमें आधुनिक सम्प्रदायों का अध्ययन और उनके नेताओं के मन—मस्तिष्क में झांकना पड़ेगा। ऐसे प्रकरण बहुत हैं। मैं केवल कुछ उदाहरण दूंगा।

जिम जोन्स ने सामान्य सभ्य लोगों को विश्वास दिलाया कि वह मसीहा है। उसने उन लोगों को अपने परिवार को छोड़ने और उसके पीछे जंगलों के मध्य में उसके "मदीना" में आने के लिये मना लिया। उसने न्यू गुयाना की सरकार को 300 एकड़ भूमि निःशुल्क देने के लिये तैयार कर लिया। उसने अपने लोगों को शस्त्र रखने और जो भी उसके सम्प्रदाय से असंतुष्टि दिखाये उसकी हत्या करने को कहा। इन लोगों ने एक सीनेटर और उसके अंगरक्षकों की हत्या की और तब उसने अपने अनुयायियों को साइनाइड का पेय पीने को कहा। उसके अनुयायियों में से 911 लोगों ने अपनी इच्छा से वही किया जो जिम जोन्स ने कहा और मर गये।

आप उसकी ओर से इतने सम्मोहन और जिन लोगों ने उसमें विश्वास किया था उनकी इतनी निष्ठा व आस्था की व्याख्या कैसे करेंगे?

डेविड कोरेश ने टेक्सास में वाको के बाह्य क्षेत्र में स्थित ब्रांच डेविडियन परिसर में अपने अनुयायियों को एकत्र किया। वे लोग उसके साथ पूरे दिन रहते थे। उन्होंने शस्त्र लिया हुआ था, क्योंकि डेविड ने उनसे ऐसा करने को कहा था।

वे लोग अपनी नवयौवना बेटियों को उसके साथ सोने देते थे। यह उसी प्रकार था जिस प्रकार अबू बक्र ने मुहम्मद की काम—वासना की पूर्ति के लिये अपनी छोटी सी बच्ची आयशा को सौंप दिया था। उन लोगों ने चार एटीएफ एजेंटों की गोली मारकर हत्या कर दी और पूरे परिसर को मूर्खता ने घेर लिया, परिणामस्वरूप आत्मसमर्पण करने की अपेक्षा उस परिसर को उड़ाकर वहां उपस्थित सभी परिवारों ने मृत्यु का वरण कर लिया। यह यह निष्ठा नहीं थी तो क्या थी? इस घटना में 90 लोगों के प्राण गये।

आर्डर आफ द सोलर टेम्पल: इस भविष्यसूचक सम्प्रदाय ने तीन भयानक सामूहिक आत्महत्या अनुष्ठानों में 74 लोगों के प्राण ले लिये। इस सम्प्रदाय के अधिकांश सदस्य उच्च शिक्षित व समृद्ध लोग थे। ये लोग अबू बक्र, उमर और उसके बेटे अली की तुलना में बहुत अधिक बुद्धिमान थे, क्योंकि अबू बक्र, उमर और उसके बेटे अली को अपने बुद्धि—विवेक का प्रयोग करने की अपेक्षा हत्या करना अधिक प्रिय था।

इस समूह के दो जाने—पहचाने नेता बेल्लियम का एक होमियोपैथिक चिकित्सक लुक जौरैट और एक धनी व्यापारी जोसफ डी मैम्ब्रो थे। ये दोनों इस सम्प्रदाय के मुहम्मद व अबू बक्र जैसे थे। ये दोनों भी अपने उन्माद में विश्वास करते थे और इन्होंने भी आत्महत्या की।

यह सम्प्रदाय सूर्य को बड़ा महत्व देता था। इनकी हत्या—आत्महत्या की भयानक पद्धति का आशय यह था कि इससे उनके सदस्य तारे 'सिरीअस' पर ले जाए जाएंगे। 'सिरीअस' की इस यात्रा को पूरा करने में सहायता करने के लिये कई बच्चों सहित अनेक शिकारों को सिर में गोली मारी गयी, काले प्लास्टिक बैग में मुंह बांधकर गला घोंटा गया और/अथवा विष दिया गया।

लुक और जोसफ ने एक पत्र में लिखा था कि "वे इस संसार के पाखंड से बहुत दूर सत्य और मोक्ष के नये नायाम को पाने के लिये इस धरती को छोड़ रहे हैं।" उनकी मृत्यु के पश्चात यह पत्र लोगों तक पहुंचा। क्या मुहम्मद ने जो उपदेश दिया, वैसी ही यह घटना नहीं प्रतीत होती है? इसमें और मुहम्मद के उपदेश में बस इतना ही अंतर है कि मुहम्मद ने आत्महत्या का समर्थन नहीं किया, क्योंकि इसमें उसका लाभ नहीं था। मुहम्मद ने अपने अनुयायियों को उसके लिये जंग छेड़ने, उसके काल्पनिक अल्लाह की राह में मारने और मर जाने का आदेश दिया। मुहम्मद ने निर्दोष लोगों को लूटने और उसके लिये धन व ताकत लाने को कहा। वह इन सम्प्रदायवादियों से कहीं अधिक व्यवहारिक था और वह अपने प्राण को संकट में डालने से बचता था।

आप ऐसे लोगों के रुग्ण विश्वासों के प्रति समर्पण की व्याख्या कैसे करेंगे? क्या आप ऐसे लोगों के नेताओं का अपने उद्देश्य के प्रति दृढ़ निश्चय को नकार देंगे?

हैवन्स गेट: 26 मार्च 1997 को "हैवन्स गेट" के 39 सदस्यों ने अपना शरीर छोड़कर हेल—बॉप क्षुद्र ग्रह की पूंछ में छिपे एक सहयोगी यान पर सवार होने का निर्णय लिया।

धरती पर अंतिम भोज समारोह करने के पश्चात इस हैवन्स गेट के लोग तीन दिन की अवधि में तीन पारी में मरे। इस सम्प्रदाय के 15 अनुयायियों की मृत्यु पहले दिन दिन हुई, पुनः दूसरे दिन 15 अन्य अनुयायियों की मृत्यु हुई और शेष की मृत्यु तीसरे दिन हुई। इन अनुयायियों के एक समूह ने खाद्य पदार्थ में फीनोबर्बिटल की खतरनाक डोज मिलाकर दिया और इसके बाद वोदका पिलाया, जब वे अचेत होकर गिर गये तो दूसरे अनुयायी ने उन लोगों के मुंह को प्लास्टिक की थैली से बांध दिया, जिससे कि उन मरणासन्न के प्राण—पखेरू शीघ्र उड़ जाएं। यह भय से रोंगटे खड़े कर देने वाली इस सामूहिक आत्महत्या थी। हत्याओं के प्रत्येक चक्र के बाद सम्प्रदाय के अनुयायी उस स्थान को साफ करते थे। अंतिम दो अनुयायियों ने स्वयं की हत्या करने से पूर्व वहां पड़े शव व अन्य वस्तुओं को उस भाड़े के भवन से व्यवस्थित ढंग से बाहर निकाला। मृत्यु के बाद भी सहायक प्रवृत्ति दर्शाने की चाह में सभी शवों की पहचान के लिये उन पर कुछ न कुछ चिह्न थे। विचित्र बात यह थी कि उन सभी के पास पांच डालर का बिल था, उनकी जेब में कुछ छुट्टा पैसा था और उनकी खाट व बिछौने से अच्छे ढंग से टांका गया छोटा सा सूटकेस था।

जॉन डी रूईटर की कहानी को भी देखिये। ये वह व्यक्ति था, जिसके अनुयायी उसे जीसस से महान मानते थे। इसके अनुयायियों अपनी बेटियों को इसके साथ मैथुन कराते थे। उसका एक अनुयायी मनोवैज्ञानिक था। यह मनोवैज्ञानिक अनुयायी कहता था कि अपनी 30 वर्ष की प्रैक्टिस में उसे जॉन डी जैसा "समझदार" कोई और नहीं मिला।

हमारे पास इस प्रकार के हजारों के प्रकरण हैं। ये सम्प्रदाय नेता करिश्माई होते हैं, वे अड़ियल होते हैं और वे अपने उद्देश्य को लेकर विश्वास से भरे होते हैं। ये सामान्य व्यक्ति नहीं होते हैं, ये मनोविकृत होते हैं। ये लोग सामान्य व्यक्तियों से पूर्णतया भिन्न

होते हैं और यही कारण है कि ये अन्य व्यक्तियों से श्रेष्ठ दिखते हैं। ये लोग प्रायः बुद्धिमान व्यक्ति होते हैं, किंतु उनके मन में वास्तविकता व कल्पना का घालमेल होता है। वे अपने यौनाकर्षण, आत्मआश्रुति, ध्येय पर केंद्रित प्रवृत्ति व अटल संकल्प के साथ दूसरों में अचंभा व घबराहट उत्पन्न कर देते हैं। ऐसा इसलिये होता है, क्योंकि ये लोग इसमें भेद नहीं कर पाते हैं कि वास्तविकता क्या है और काल्पनिक क्या है। ये लोग पहले व्यक्ति होते हैं जो अपने झूठ पर विश्वास करते हैं। यही दृढ़निश्चय उनके निकट के मित्रों व नातेदारों को मूर्ख बनाता है और वे मानने लगते हैं कि उन्हें कुछ ऐसा पता है जिसे अन्य लोग नहीं जानते हैं।

मुहम्मद इन लोगों से भिन्न नहीं था। वह एक मनोविकृत था। मैंने 'मुहम्मद के पीछे की ताकत' शीर्षक वाले एक अन्य लेख में उसके मनोविकृत वृत्त का वर्णन किया है। हिटलर, स्टालिन व अन्य करिश्माई सम्प्रदाय नेता मूर्ख नहीं थे। ऐसे नेता अति मेधासम्पन्न थे, पर विक्षिप्त और उन्मादी थे।

इससे भी बड़ी विक्षिप्तता इस तथ्य में दिखती है कि अरबों लोग ऐसे मनोविकृत के अनुयायी हैं और ये सभी लोग कुछ तार्किक दोषों पर अपनी मान्यता रखते हैं। इन लोगों में से प्रत्येक अपनी आस्था का आधार दूसरों की विश्वासप्रवणता को बनाते हैं तथा इनमें से सभी लोग भेड़ों के जैसे एक—दूसरे के पीछे चलते हैं। यदि सभी भेड़ें एक ही मार्ग पर चलें तो वही मार्ग चलने के लिये उपयुक्त लगता है। भेड़चाल वाले ये लोग मूर्खतापूर्ण बात करते हैं कि "एक अरब लोगों को तो मूर्ख नहीं बनाया जा सकता है न।"

भेड़चाल और स्वचेतना का लोप

मुसलमान स्वयं को *उम्मा* कहते हैं। यह शब्द *उम्मी* शब्द से निकला है। मुहम्मद ने स्वयं को जैसा इंगित किया था उसे *उम्मी* कहते हैं और इसका अर्थ अनपढ़, कभी विद्यालय का मुंह न देखने वाला, अशिक्षित होता है।

इसलिये *उम्मा* का अर्थ है अनपढ़ अनुयायियों का समुदाय। मुहम्मद के प्रकरण में इसका आशय है कि उसका ज्ञान ईश्वरीय स्रोत से था। यद्यपि *उम्मा* के लिये यह आशय नहीं होता है। इस प्रकार परिभाषानुसार *उम्मा* का अर्थ हुआ *मोमिनों का अज्ञानी समूह*।

आयत 3.20 बताती है:

और एहले किताब (बाइबिल, तोरात, इंजील को मानने वालों) और जाहिलों (उम्मीयिन) से पूछो, "क्या तुम (भी) इस्लाम पर ईमान लाए हो?"

यहां *उम्मीयिन* शब्द *उम्मी* शब्द का बहुवचन है और इसका अनुवाद इस प्रकार है:

युसुफ अली: *वो जो अशिक्षित हैं*

पिक्थाल: *वो जो अनपढ़ हैं*

शारिक: *अशिक्षित लोग*

आइये एक और आयत देखते हैं (इमरान 3:75):

'वे कहते हैं, 'इन अज्ञानियों (मूर्तिपूजकों) (का हक़ मार लेने) में हम पर कोई दोष की राह ही नहीं। (उम्मीयिन)'

युसुफ अली इस आयत में इस शब्द का अनुवाद *अज्ञानी* करता है।

पिक्थाल इसका अनुवाद *जेंटाइल्स* के रूप में करता है।

शाकिर इस शब्द का अनुवाद *अशिक्षित लोगों* के रूप में करता है।

संज्ञा जेंटाइल का प्रयोग उस व्यक्ति के लिये होता है जो बाइबिल, तौरात, इंजील को नहीं जानता है। अंग्रेजी में जेंटाइल्स शब्द का पर्यायवाची "मूर्तिपूजक अथवा बहुदेववादी" होता है।

ऐतिहासिक रूप से जेंटाइल शब्द का प्रयोग शासन करने वाले रोमन अ—रोमनों (विदेशियों) के लिये करते थे। यहूदियों ने इस शब्द को अ—यहूदियों को इंगित करने के लिये ग्रहण किया था, जबकि ईसाईयों ने इस शब्द का प्रयोग मूर्तिपूजकों अर्थात् बहुदेववादियों के लिये किया। कुरआन में *अल—उम्मीयिन* शब्द का अनुवाद सामान्यतः *अशिक्षित जनसमूह* के लिये किया जाता है। आयत 62.2 में लिखा है...

युसुफ अली इसका अनुवाद इस प्रकार करता है:

"वही है जिसने हम अशिक्षित लोगों के बीच हमारे बीच से ही एक रसूल भेजा है।"

और अपनी टीका में वह लिखता है: *"अशिक्षित: लोगों के लिये यथा प्रयुक्त, यह अरबी लोगों को इंगित करता है, उस पुस्तक के लोगों की तुलना में..."*

आयत 2.78: *"और उनमें कुछ अनपढ़ हैं, वे पुस्तक (तौरात) का ज्ञान नहीं रखते।"*

उम्मी शब्द की उत्पत्ति *उम* (माता) से हुई है। अंग्रेजी में इसका शाब्दिक अनुवाद होगा *"प्राकृतिक"*, यद्यपि इन दो शब्दों के अर्थ समय के साथ भिन्न हो गये हैं।

शब्द—व्युत्पत्ति विज्ञान के अनुसार *उम्मी* शब्द का अर्थ है अज्ञानी व अशिक्षित होने की प्राकृतिक अवस्था में होना, जैसा कि मनुष्य तब होता है जब वह अपनी मां के गर्भ से जन्म लेता है।

अतः उम्मा का अर्थ है अशिक्षित व अनपढ़ लोगों के समूह जिसके लोग ग्रंथों को नहीं जानते हैं और इसलिये सद्मार्ग पर आने में समर्थ नहीं हो सके। उम्मा को निरंतर मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है। ईमाम भी इसी मूल से आता है जो कि उम्मा का नेतृत्व करता है। यह मूलतः भेड़ और चरवाहे वाली अवधारणा है। मुसलमानों का समूचा समुदाय ऐसा भेड़ माना जाता है जिसे एक चरवाहे की आवश्यकता होती है।

मोमिनों से अपेक्षा की जाती है कि वे वही करेंगे जो अन्य मोमिन करते हैं तथा उनमें से सभी को आंख बंद कर उसका अनुपालन करना है जो ईमाम उनसे करने को कहता है।

ईमाम से अपेक्षा की जाती है कि वह मोमिनों को वही करने का निर्देश देगा जो मुहम्मद किया करता था।

सही या गलत, अच्छा या बुरा आपके अपने गुणों के आधार पर निर्धारित नहीं किये जाते हैं। सही वह है जो मुहम्मद ने कहा या किया और गलत वह है जिसे मुहम्मद ने करने से मना किया। दूसरे शब्दों में मुसलमानों को मुहम्मद के सही या गलत होने का निर्णय अपने विवेक अथवा अपनी नैतिकता के पैमाने से नहीं करना है, अपितु उसे इस निर्णय मुहम्मद के कार्यों व शब्दों से करना है। यह प्रवृत्ति मुसलमानों के सोचने—समझने की क्षमता को नष्ट कर देती है। एक जैसा ही व्यवहार और चिंतन प्रक्रिया का अनुपालन करने से व्यक्ति समूह में सुरक्षा व शांति प्राप्त करता है।

एक जैसा बनने को प्रोत्साहित किया जाता है और स्वतंत्र विचार को कठोरता से कुचल दिया जाता है। स्वतंत्र विचार रखने वालों को बहुमत के साथ असहमति प्रकट करने पर अपार पीड़ा व कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

मुसलमानों को आनंद/पीड़ा के उल्टे रक से भेड़ों के जैसे एक पंक्ति में रखा जाता है। एक जैसा बनने पर उन्हें पुरस्कृत किया जाता है। उनकी चाटुकारिता को पुरस्कार मिलता है और इससे उन्हें स्वीकार्यता एवं सामाजिक स्थिति में ऊपर उठने में सहायता मिलती है। दूसरी ओर स्वतंत्र विचार रखने के भयानक परिणाम होते हैं।

मनोवैज्ञानिक स्तर पर मोमिन को दोजख के भय से आतंकित किया जाता है और जन्नत का लोभ देकर ललचाया जाता है। इस मनोवैज्ञानिक दबाव का उद्देश्य मोमिन में तार्किक सोच अथवा उसके विवेक को नष्ट करने एवं उसे ऐसी बातों से विमुख किये जाने की मंशा से बनाया जाता है जिससे इस्लाम नामक बड़े झूठ पर से उसका विश्वास डगमगा सकता हो।

यह एक और महत्वपूर्ण तथ्य है जिसने इतनी सदियों तक इस्लाम को जीवित रखने में सहायता की है। मुसलमानों को हतोत्साहित किया जाता है और इसलिये वे स्वतंत्र रूप से सोचने का साहस नहीं कर पाते हैं। इस प्रारूप को तोड़ने और एक जैसा बनने की प्रवृत्ति से विद्रोह करना इतना पीड़ादायी होता है कि इसकी कल्पना मात्र से ही मोमिन सिहर उठता है। यदि कोई मोमिन अपने बुद्धि व विवेक से सोचने—समझने लगे तो वह अपनी बीबी, परिवार, मित्र, नौकरी, प्रस्थिति, सम्मान, संपत्ति, स्वतंत्रता और अपना जीवन भी गंवा सकता है।

समाज का भय और मृत्यु के बाद दंड का भय ऐसे दो कारण हैं जिससे इस्लाम इतने लंबे समय तक बना रहा।

इस झूठ को कभी चुनौती नहीं दी गयी है और जब तक इस झूठ पर प्रहार नहीं किया जाएगा, यह वैसे ही बना रहेगा। किसी झूठ का लंबा काल यह प्रमाण नहीं होता कि वह झूठ नहीं सत्य है। इस्लाम भय के कारण अभी तक जीवित रहा, न कि अपनी सत्यता के कारण।

सामाजिक रूप से इस्लाम मोमिनों के आत्म को नष्ट करने में योगदान देता है। आत्म अथवा स्व को नष्ट करना एक तकनीकी शब्द है जिसका प्रयोग भेंड़ की मानसिकता के लिये किया जाता है। यह एक ऐसी मनोवैज्ञानिक स्थिति होती है जहां मनुष्यों द्वारा किसी भीड़ अथवा बड़े समूह में सम्मिलित होने पर उनमें भेंड़ की मानसिकता उत्पन्न की जाती है।

स्व-चेतना का नाश वह स्थिति है जिसमें स्व और वैयक्तिकता के प्रति जागरूकता को नष्ट किया जाता है। इस्लाम में वैयक्तिकता अर्थात् स्व-चेतना का बोध पूर्णतया: वर्जित है और व्यक्ति का जीवन उम्मा के साथ जुड़ा होता है। इस्लाम में मुसलमान को न केवल एक प्रकार से दास (गुलाम) वाली स्थिति में ला दिया जाता है, अपितु उसे वास्तव में इसी नाम से बुलाया जाता है।

स्व-चेतना को नष्ट किये जाने से व्यक्ति में आत्म—संयम व व्यवहार का मान्य नियमन की प्रवृत्ति कम हो जाती है। यह मुसलमानों के व्यवहार में हिंसक भीड़, उन्मादी उपद्रव व हिंसक समूह बनने के रूप में सामने आता है। ऐसा व्यवहार विशेषरूप से तब दिखता है जब उम्मा किसी मस्जिद में प्रवेश करती है और वहां पर ईमाम व मुल्ला मुसलमानों पर "अत्याचार" का आरोप लगाते हुए यहूदियों व काफिरों को बुरा—भला कहने का आह्वान करते हैं तथा ईमाम व मुल्लाओं का उग्रभाषण सुनकर उनका मुख क्रोध से तमतमा उठता है।

मुसलमान को यह पूछने की अनुमति नहीं होती है कि क्यों। मुसलमानों को यह पूछने की अनुमति नहीं होती कि उस अत्याचार का प्रमाण क्या है अथवा उन्हें यहूदियों व काफिरों से घृणा क्यों करनी चाहिए? यदि मुसलमानों में कोई बच्चा इस प्रकार का प्रश्न पूछ लेता है तो उसे तमाचा मार दिया जाता है जिससे कि उसे लगे उसने अनुचित प्रश्न पूछा है। किंतु यदि किसी वयस्क मुसलमान ने ऐसा प्रश्न पूछ लिया तो वह बड़े संकट में पड़ सकता है।

स्व-चेतना को नष्ट किया जाना नरसंहार, घिसी—पीटी बातों को मानते रहने और विसंदमन अर्थात् कानून, सामाजिक मर्यादाओं आदि को तोड़ने से जुड़ा हुआ होता है। ये सब एक सच्चे मुसलमान के व्यवहार के लक्षणों को बताते हैं। फालुजाह में अमरीकी ठेकेदारों को मुसलमान भीड़ द्वारा पीट—पीट कर मार डालने, रामल्ला में इजराइल सैनिकों की अंतड़ियां निकाल लेना और उनके हृदय को चबा जाना दो ऐसे प्रकरण हैं जो सबसे सामने आये, क्योंकि पीड़ित अमरीकी व इजराइली थे। पर इस्लाम में इस प्रकार बर्बर व्यवहार होना असामान्य नहीं है। ईरान में मुसलमानों ने बहाई धर्म को मानने वाले सहस्रों (हजारों) लोगों की पीट—पीट कर हत्या कर दी थी।

पाकिस्तानी में उन लोगों के साथ भी ऐसा ही होता है, जिन पर ईशनिंदा कानून के उल्लंघन और मुहम्मद के अपमान का आरोप लगता है। मस्जिदों में तकरीरें सुनने के बाद मुसलमान प्रायः उन्मादी स्तर पर आवेश में आ जाते हैं और हत्या करने के लिये तैयार हो जाते हैं।

विडम्बना यह है कि चरम अतार्किकता से जुड़ी इस्लाम की ऐसी बर्बरता और दमनकारी प्रकृति ही है जिसने इस सिद्धांत को एक सफल मजहब बना दिया है और इसे इतने लंबे समय तक जीवित रखे हुए है।

इस्लाम किसी भी तार्किक प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकता है। मुहम्मद भली-भांति यह जानता था कि उसके पास आलोचकों द्वारा उठाये गये प्रश्नों के उत्तर नहीं हैं। इसलिये उसने ऐसी व्यवस्था बनायी कि कोई कभी प्रश्न करने का साहस न कर सके।

पश्चिम में भी यदि किसी ने इस्लाम की तार्किक आलोचना की तो मुसलमान "अपनी भावनाएं आहत होने" का बहाना बनाकर समूह में विरोध प्रदर्शन करते हैं और ऐसे देश जो दारुल-इस्लाम अर्थात मुस्लिम देश हैं वहां पश्चिमी देशों के लोगों की हत्या करते हैं। मुसलमान ऐसा केवल इसलिये करते हैं कि आपको भयभीत कर सकें, जिससे कि आप आगे कभी उनके मजहब की आलोचना न करें। वे भली-भांति जानते हैं कि वे आपकी तार्किक बातों का उत्तर नहीं दे सकते हैं और वे यह भी जानते हैं कि यदि सबओर से तार्किक प्रश्न पूछे जाने लगे तो इस्लाम समाप्त हो जाएगा।

सबने मुहम्मद की प्रशंसा क्यों की?

मुसलमानों के मन में यह प्रश्न उठता है: *मुहम्मद के सभी साथियों ने उसकी इतनी प्रशंसा क्यों की? उसकी मृत्यु के बाद भी कोई उसकी निंदा करते हुए कोई बात क्यों नहीं की?*

इसका उत्तर यह है कि एक ऐसा समाज जो किसी व्यक्ति केंद्रित सम्प्रदाय पर आधारित होता है, वहां अपने मन की बात कहना इतना सरल नहीं होता है। ऐसे समाज में सत्य बोलने से आपका तिरस्कार व बहिष्कार हो सकता है और आपके प्राण भी जा सकते हैं। ऐसे समाज में जो लोग स्वतंत्र रूप से चिंतन करते हैं वे अपने मन की बात दबाकर रखते हैं। जबकि चाटुकार मिथ्या— प्रशंसा व अतिरंजित बातों के माध्यम से अपने नेता का महिमामंडन करते हैं, जिससे कि समाज उनको प्रिय मानने लगे। सम्प्रदाय के नेता की मृत्यु के बाद चाटुकार उसकी प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिये उसके बारे में अनेक झूठी कहानियां गढ़ते हैं। आज भी स्थिति परिवर्तित नहीं हुई है। इस्लाम से जो लोग असंतुष्ट हैं वो इस बारे में बात करने से भयाक्रांत रहते हैं। इस्लाम में असंतुष्टों का उत्पीड़न किया जाता है, जबकि मुहम्मद का महिमामंडन लिखने वाले चाटुकारों को सम्मानित किया जाता है। ऐसे दमनकारी और कपटी वातावरण में सत्य बाहर कैसे आ सकता है?

हमारे समक्ष ऐसी बहुत सी घटनाएं हैं जिनमें मुहम्मद ने उन लोगों की हत्या का आदेश दिया है जिन्होंने उसकी आलोचना की थी।

ऐसे ही बहुत सी घटनाएं ऐसी भी हैं जिसमें मुहम्मद का साथी उमर ऐसे लोगों पर तलवार ताने खड़ा रहता था जो मुहम्मद के निर्णयों पर प्रश्न उठाते थे और उमर ऐसे लोगों को गरदन काट लेने की धमकी देकर भयभीत कर देता था। मुहम्मद चाटुकारिता को प्रोत्साहन देता था और आलोचना करने वालों को दंडित करता था। इसलिये मुहम्मद की सफलताओं का रहस्य अब

रहस्य नहीं रहा। वह इसलिये सफल हुआ क्योंकि उसने सबसे बड़ा झूठ बोला और वह उन लोगों के प्रति अत्यंत निर्दयी हो जाता था जो उस पर प्रश्न उठाते थे और उससे असहमति व्यक्त करते थे।

मुहम्मद इसलिये भी सफल हो गया, क्योंकि वह सबसे अधिक अज्ञानी, अंधविश्वासी और बर्बर लोगों के बीच आया। लूटमार करने वाले अपने मजहब को स्थापित करने के लिये उसे जिन गुणों की आवश्यकता थी, वो सब उसके आरंभिक अनुयायियों में पहले से ही थे। उग्रराष्ट्रीयता, मजहबी कट्टरता, अहंकार, अहंकारोन्माद, मूर्खता, आत्मश्लाघिता (अपनी प्रशंसा में बड़ी—बड़ी डींगे हांकना), लालच, यौन—वासना, जीवन के प्रति तिरस्कार व अन्य नीच चारित्रिक लक्षण इस्लाम की विशिष्टताएं हैं और उस समय अरब में ये सब कच्चा माल पहले से ही उपलब्ध था जहां मुहम्मद ने अपनी पैगम्बरी का व्यावसाय प्रारंभ किया। बाद में उन राष्ट्रों पर भी इन लक्षणों को थोपा गया, जो इस्लाम का शिकार बने। उसे बस एक बड़ा झूठ तैयार करना था और उसमें थोड़ी असहिष्णुता और थोड़ी हिंसा का तड़का लगाना था और इस प्रकार घृणा का सबसे सम्पूर्ण मजहब तैयार हो गया।

इस्लाम इन कारणों अब तक जीवित रहा है, न कि इसलिये कि यह एक सच्चा मजहब है।